NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 2, ISSUE 1, Jan-2016

सुनीता कुमारी (SUNITA KUMARI)
RESEARCH SCHOLAR
हिन्दी विभाग
ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, चुरू, राजस्थान

निर्देशक
डॉ0 गोविन्द द्विवेदी
हिन्दी विभाग
ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, चुरू, राजस्थान

हरिशंकर आदेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सार

साहित्य और कला में कलाकार के व्यक्तित्व की छाप सदैव अंकित रहती है । हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार– कबीर, सूर, तुलसी, पन्त, प्रसाद और निराला आदि के काव्य के भावों में गम्भीर अभिव्यक्ति हुई है । इनके साहित्य में उनका सहज और सौम्य व्यक्तित्व मिलता है । आदेश जी को एक व्यक्ति, एक कवि, एक लेखक के रूप में जानने–समझने के लिए उनका अब तक का लिखा गया साहित्य ही एक दर्पण है क्योंकि एक साहित्यकार का व्यक्तित्व किसी न किसी रूप में अपने जीवन और समाज से प्रभावित और प्रेरित होता है । उनके साहित्य में गतिशील रहने वाले प्रत्येक तत्त्व विद्यमान रहते हैं । उनके जीवन की सहजता, तत्परता और मानव मूल्यों के प्रति विकसित अवस्था उनके साहित्य में गतिशील रहने वाले प्रत्येक तत्व विद्यमान रहते हैं । उनके जीवन की सहजता, तत्परता और मानव मूल्यों के प्रति विकसित अवस्था उनके

साहित्य में पल्लवित होती है । इसलिए कहा जा सकता है कि आदेश जी का कृतित्व ही उनका व्यक्तित्व है और व्यक्ति ही कृतित्व है ।

(क) जीवन परिचय – भारतवर्ष की पावन भूमि पं० जीवन राम जी के घर 6 अगस्त, 1936 को इनका जन्म हुआ । इनके पिता संस्कृत के विद्वान और भारतीय संस्कृति के पुजारी थे । सहजता उनके जीवन का शृंगार थी । उनका जीवन परम प्ररेणात्मक और आदर्श था । इनकी माता का नाम यमुना देवी था । इन्हें अपनी माँ से अमित दुलार मिला । इनकी माँ अत्यन्त विनम्र उदार और दयालु महिला थी। उनके चेहरे की मुस्कराहट से बेटे को हँसी मिली, इनकी पत्नी निर्मला आदेश पमर विद्षी, सहज, दयालु और सहिष्णु आदर्श भारतीय महिला है । साहित्यिक अभिरूचि और सांस्कृतिक जीवन इनकी पूजनीय व्यक्तित्व की गुरुता है । चिन्तन की गम्भीरता और अलौकिक प्रेरक भाव इनको दैवी रूप में प्राप्त है। एक बार आपको कनाड़ा में सोते हुए स्वप्न आया। वे देखती है कि उनके संस्थान का बहुत पुराना पीपल वृक्ष हाथ जोड़े खड़ा है और कह रहा है कि मुझे कल काटा जाएगा, किसी तरह बचा लीजिए । आँख खुलने पर पता किया तो यह बात सच निकली, उन्होंने आदेश को बुलाकर कहा कि इस वृक्ष को काटा नहीं जाना चाहिए । वृक्ष काटा नहीं गया । वह बडात्रा पुराना वृक्ष आज भी लहरा रहा है ।
(ख) शिक्षा–दीक्षा – आदेश जी में हर पल पढ़ने, चिन्तन–मनन करते हुई सीखने की प्रवृति दिखाई देती है । इनकी शिक्षा इनकी प्रवृति के अनुसार ही हुई है । भारतीय संस्कृति के पुजारी ने हिन्दी और संस्कृत में एम०ए० उत्तीर्ण कर मानव मूल्यों के आधार ओर आचार्यों, साहित्यकारों और दार्शनिकों के मन्तव्य पर विचार करने का अवसर

प्राप्त किया है । संगीतात्मक अभिरूचि के विकास हेतु संगीत से एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की । इन्हीं क्षेत्रों में अधिक ज्ञानार्जन हेतु साहित्यालंकार, विद्यावाचस्पति, साहित्यरत्न, संगीत–विशारद और संगीत रत्न की परीक्षाएं उत्तीर्ण की ।

आदेश जी में बचपन से ही साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने की इच्छा जाग चुकी थी । वे बचपन से ही विद्यालयीय और नगर स्तर की कविता और अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में पुरस्कृत होते रहे । 'मेरे अग्रज पं० विद्याशंकर अनलेश नगर के चर्चित विद्वान, कवि, समाजसेवी और हिन्दू संगठनकर्त्ता थे । वे वीर और हास्य रस प्रधान कवि थे । मैं उनकी अधिकांश कविताएं कण्ठस्थ कर लेता था । उनकी कविता को याद करने के बल पर विद्यालय और नगर की कविता में पुरस्कार प्राप्त करता रहता था । एक बार अत्यन्त व्यस्त होने के कारण उन्होंने मुझे झिड़क दिया और मर्म स्पर्शी शब्द कह दिए । मेरे किशोर मन और भावनाओं को गहरी चोट मर्मान्तक पीड़ा का अनुभव हुआ । मेरी आँखें आसुओं के बाढ़ से डूब गई । ऐसे में अग्रज ने जो दुलार और स्नेह दिया, उससे 'अकेला चला रे' काव्य समस्यापूर्ति के रूप में मेरी प्रथम रचना सामने आई –

"चला मैं अकेला, अकेला चला रे ।
तुम्हें भेंट कर अपनी जीवन खुशी को,
तुम्हें भेंट कर अपनी उर की हँसी को,
तुम्हें प्रणय की विषम–अग्नि शिखा पर,
जला मैं अकेला, अकेला जला रे ।।
अपेक्षित मुझे अब न व्यवहार तेरा,
मुझे अब न इच्छित मृषा प्यार तेरा,

अतः आज मैं फिर तुम्हारे बिना ही
भला हूँ अकेला, अकेला भला हूँ ।"[1]

विवाह एवं परिवार – इसकी पत्नी श्रीमती निर्मला आदेश परम विदुषी, सहज एवं दयालु एवं सहिष्णु आदर्श वाली भारतीय महिला ह । विनम्रता आपकी पहचान है । साहित्यिक अभिरूचि और संस्कारित जीवन इनके पूजनीय व्यक्तित्व की गुरुता है । चिन्तन की गम्भीरता और आलौकिक प्रेरक भाव इनको दैवी रूप में प्राप्त हैं ।

भारतीय संस्कृति के उपासक प्रो० आदेश के मन में आदर्श व्यक्तित्व, महापुरुष भक्ति ओर भक्त कवियों के प्रति विशेष श्रद्धाभाव रहा है । उन्होंने साक्षात्कार के समय सर्वाधिक प्रभावित करने वाले व्यक्तित्व के विषय में कहा हैं, "संसार के महानतम् अनुरागी और वैरागी गोस्वामी तुलसीदास द्वारा चित्रित मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, योगेश्वर कृष्ण एवं भक्त शिरोमणि पवन–पुत्र हनुमान के आदर्शों ने मुझे सदैव प्रेरित किया है । श्री राम मेरे आराध्य है ।"

नाट्य कृतियों की रचनाकार उनका निर्देशन भी आदेश जी स्वयं ही करते थे । सांस्कृतिक अभिरूचि सम्पन्न इनकी पत्नी श्रीमती निर्मला आदेश इनके समस्त कार्यों की परम सहायिका ही नहीं प्ररेणा सूत्र भी है । इनकी बेटी श्रीमती सुरभि गोवर्धन भारतीय संगीत की आदर्श पहचान है । सुर कोकिला श्रीमती सुरभि की सुरलहरी अपने पिता श्री प्रो० आदेश के लक्ष्य को पूरा करने में विशेष सहयोगी सिद्ध हुई है । नाट्य मंथन गीत और संगीत सन्दर्भों में श्रीमती सुरभि गोवर्धन ने सम्मानीय स्थान बना लिया है ।

(ग) प्रेरणाश्रोत एवं आराध्य

---

[1] पुष्पा देवी, प्रो० हरिशंकर आदेश के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य, पृ० 26

प्रेरणाश्रोत – प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में किसी न किसी की प्रेरणा अवश्य रहती है । अंग्रेजी में कहा गया है – "ए ओमेन इज आलवेज विहांड द ग्रेट मैन" अर्थात् प्रत्येक महान् व्यक्ति के पीछे एक नारी का हाथ होता है । 'प्रोफेसर हरिशंकर आदेश' के प्रेरणश्रोत उनकी माता तथा पिता जीवन राम थे तृतीय सप्तशती, जीवन सप्तशती पिता के नाम पर ही है । जो इनके प्रेरणा श्रोत रहे हैं । इनके पिता संस्कृत के विद्वान और भारतीय संस्कृति के परम पुजारी थे । सहजता इनके जीवन की प्रमुख विशेषता थी । उनका जीवन परम प्रेरणादायक एवं आदर्श था । प्रो० हरिशंकर आदेश ने अपने पिता के विषय में स्वयं लिखा है –

"भक्त था वेद और रामायण का,
हर घड़ी लव लगी थी ईश्वर से ।
कौमी–मजहब का फर्क था न जरा,
तुझे, था प्यार खुदा के डर से ।।"[2]

प्रोफेसर हरिशंकर आदेश को विन्रमता सहजता और सादगी आदि गुण पिता से धरोहर रूप में मिले हैं । माता श्रीमती 'यमुना देवी' के नाम पर चतुर्थ सप्तशती, जमुना सप्तशती लिखी है मातृ–पितृ भक्ति भाव धारा में बहते हुए आज वे पिता जी को याद करके उनके समक्ष नत–मस्तक होकर उनका आशीर्वाद चाहते है–

"ऐ मेरे देवता! मेरे भगवान!
करते रोशन रहो तुम मेरा जहाँन ।
दुआ दो तुम जहां भी हो आदेश,
बन सको नेक और भला इंसान ।"[3]

---

[2] प्रोफेसर हरिशंकर आदेश, देवता, पृ० 107

अपने पिता के विषय में आदेश जी ने लिखा है कि पिता जी जीवन राम, राम मन्दिर ईश्वरोपासना करते हुए 6 नवम्बर, 1963 को ब्रह्मलीन हो गये थे –

"साल त्रेसठ, छः नवम्बर की शाम,
वेद मन्त्रों को पढ़ा करते ध्यान ।
योग–आसन में मुस्कुराते हुए,
ब्रह्म में जज़्ब हुए जीवन राम ।।"[4]

इन्हें अपनी वात्सल्यमयी माँ यमुना देवी से अत्यधिक लाड–प्यार एवं दुलार मिला । इनकी माँ अत्यन्त विनम्र, उदार एवं दयालु थी जिनकी चेहरे की मुस्कुराहट से बेटे को हँसी मिली, उनकी दयालुता से इनमें प्राणी प्रेम का अपूर्व भाव उत्पन्न हुआ । मां के आशीर्वाद एवं प्यार की शीतल छाया में इन्हें सहज भाव एवं भावाभिव्यक्ति हेतु भाषा मिली । इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्रोफेसर हरिशंकर आदेश के प्रेरणा श्रोत उनकी माता यमुना देवी एवं पिता जीवन राम थे ।

प्ररेणाश्रोत के विषय में पूज्य पिता के अतिरिक्त महात्मा कबीर, महात्मा तुलसीदास, अब्दुल रहीम खानखाना तथा बिहारी–लाल का उल्लेख करते हुए लिखा है –

"जीवन क शैशव काल में पूज्य पिता जी के श्री मुख से महात्मा कबीर महात्मा तुलसीदास तथा अब्दुल रहीम खानखाना के दोहे सुनने को मिले । प्राइमरी बेसिक हिन्दी रीडर आदि पाठ्य पुस्तकों में उपर्युक्त कवियों के दोहे पढे और कण्ठस्थ किए । कालांतर में हिन्दी के महान् कवि बिहारो लाल की 'बिहारी सतसई' के गहन अध्ययन का

[3] प्रोफेसर हरिशंकर आदेश, देवता, पृ० 110
[4] वही, पृ० 108

अवसर मिला । इसी सतसई परंपरा से प्रभावित होकर मैंने गत शताब्दी के साँतवे दशक में 'निर्मल सप्तशती' की रचना की और वही धारा इस 'आदेश सप्तशती' में भी अजस्र रूप से प्रभावित हुई है। दोहे की रचना न तो किसी क्रम विशेष से की गई है । और न किसी विषय विशेष को ही लक्ष्य बनाया गया है ।"[5] डॉ० हरिशंकर आदेश ने वीरप्राणि एवं पत्नी निर्मला बास की प्रेरणा स्वरूप मानते हुए लिखा है –

"तब से सत्‌त काव्य साधना तथा वाणि उपासना के प्रसाद स्वरूप मेरे लिए दोहे सहित अन्य किसी क्षंद की रचना भी सहज और संभाव्य हो गई ।..... जब भी वीरपाणि की प्रेरणा होती है मैं उस भावानुभूति को अविलंब कागज पर लेता हूँ....संप्रति मैं दोहे नहीं रचता अपितु दोहे स्वयं मुझसे अपने को रचवा लेते हैं अथवा यूँ कहिये कि मेरी वाणी और लेखिनी से स्वतः निःसृत होते रहते हैं । निर्मल सप्तशती के रूप में मेरी प्रिय धर्मपत्नी की प्रेरणा तो थी ही,"[6]

डॉ० नरेश मिश्र को हरिशंकर अपना प्रेरणाश्रोत मानते है –

"इस सप्तशती के सृजन और संपादन में डॉ० नरेश मिश्र प्रदत्त प्रेरणा ने असीम नैतिक बल प्रदान किया है ।"[7]

आराध्य – प्रत्यक व्यक्ति किसी न किसी परमशक्ति को अपना आराध्य मानता है जिसकी पूजा, अर्चना, उपासना अथवा शक्ति में ही समर्पित रहता है । प्रोफेसर हरिशंकर आदेश के ईष्ट देव राम पिता से धरोहर रूप में ईष्ट देवता को प्राप्त कर आदेश ने राम को ही अपना आराध्य एवं आदर्श राम थे । महाकवि हरिशंकर आदेश का आदर्श पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का खाओ पिओ और मौज मनाने का नहीं था ।

---

[5] हरिशंकर आदेश, आदेश सप्तशती (कुछ शब्द), पृ० 15

[6] डॉ० हरिशंकर आदेश, विवेक सप्तशती (प्राक्कथन), पृ० पअ

[7] वही, पृ० अपपप

वे इनके विरोधी थी । क्योंकि उनके आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम राम है वे तो ऐसे राम की कल्पना करते हैं जहां पर सभी व्यक्ति स्वस्थ सुखी सम्पन्न हो उनमें इन्सानियत का भाव भरा हो 'चलो यहां से दूर' नामक गीत कवि की इन्हीं भावनाओं का प्रेरक अभिव्यक्ति है –

"हो जहां न कोई भेद–भाव ।
प्रश्रय पाये मनुजत्व – भाव ।।
हो स्वस्थ सुखी, सम्पन्न सभी
हो जहां न कोई भाव ।।"[8]

'महाकवि जयशंकर प्रसाद' की इन पंक्तियों की तुलना की गई है –

"ले चल मुझे भुलावा देकर
मेरे नाविक धीरे–धीरे
उस निर्जन में निश्छल प्रेम कथा कहती हो
तज कोलाहल की अवनी रे ।।"

'लहर' – जयशंकर प्रसाद

भारत भूमि के बहते उसी आदर्श मर्यादा–पुरुषोत्तम का गुणगान हरिशंकर आदेश ने प्रवासी की पातीः – भारत माता के नाम में उन्होंने लिखा है –

"नित्य बिखराकर अजिर में ज्योत्सना'
कर रहा आकाश जिसकी अर्चना,
जो उपासक हैं सदा मनुजत्व का
दे रहा जो विश्व को नव–चेतना ।
स्वर्ग जिसके सामने हैं दीन–हीन,

[8] प्रोफेसर हरिशंकर आदेश, शरदः शतम्, पृ० 38

अनुपमेय विराट जिसका वेश है ।"[9]

इससे स्पष्ट हो जाता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम हरिशंकर के इष्ट देव, पितृ देव परिवार देवता एवं आराध्य है । कवि ने ईश्वर की सर्वव्यापकता पर चिन्तन कर उनके प्रकाश के ग्रहण कर जीवन में गतिशील रहने का संकेत किया है । संसार को विषमताओं, उलझनों, विद्रपताओं रूपी वनों में ईश्वर की खोज को निरर्थक बतलाते हुए उसे अपना आराध्य बनाकर हृदय से याद करने का आह्वान किया है –

"तिल से तेल न हो विलग, पावक से न प्रकाश ।
अणु–अणु में आदेश व्यूँ, ईश्वर का है वास ।।"[10]
वन–वन में खोजा विकल, खोजा हर–हर धाम ।
नयन मूंद देखा जभी, मिला हृदय में राम ।।"[11]

भाव विह्वल कवि की अनन्य भक्ति में तुलसी की अनुराधक और कबीर की साधक शक्ति का सुन्दर समन्वय परिलक्षित होता है। वे राम को स्वामी और अपने को चाकर कहते हैं । राम को पतितोद्धारक रूप देते हुए कहा है –

"चाकर हूँ मैं राम का, स्वामी केवल राम ।
दोष–पुंज अध–कुंज में, पतितोद्‌ाधारक राम ।।"[12]

(घ) कर्मस्थली – प्रो० आदेश की कर्मस्थली ट्रिनीडाड, कनाड़ा और अमेरिका बन गई है । भारत सरकार द्वारा हिन्दी और भारतीय संस्कृति के प्रचारार्थ ट्रिनीडाड भेजा गया । वे 16 नवम्बर, 1966 को भारत से ट्रिनीडाड के लिए रवाना हुए थे । उन्होंने 'शतदल' काव्य–संग्रह के पूर्व कथन में स्वयं लिखा है । "16 नवम्बर 1966 ई० भी वह रजनी

---

[9] प्रोफेसर हरिशंकर आदेश, प्रवासी पाती : भारत माता के नाम, पृ० 37
[10] प्रोफेसर हरिशंकर आदेश, निर्मल सातशती, पृ० 70
[11] वही, पृ० 31
[12] प्रोफेसर हरिशंकर आदेश, निर्मल सातशती, पृ० 35

चिरस्मरणीय है जब मैंने सीमित एवं अपरिपक्व परिवार के साथ पालम एयरपोर्ट, दिल्ली में प्रथम बार भारतीय वायुयान में प्रवेश किया है ... 19 नवम्बर, 1966ई० शनिवार की मध्य रात्रि... ठीक बारह बजे जब मैं पियार्को एयरपोर्ट से बारह निकला था ।

कर्म स्थली के विषय में निर्मल सप्तशती में गागर में सागर प्रस्तुत करने वाली निर्मल सप्तशती की रचना ट्रिनीडाड, कनाड़ा में होती रही और सम्पन्न अमेरिका में हुई । कवि ने स्वयं लिखा है–

"सूत्रपात ट्रिनीडाड में, कनाड़ा में विस्तार ।
अमेरिका मैं हैं किया, इसका उपसंहार ।।"[13]

महान, संगीताकार, संगीताचार्य एवं महाकवि आदेश उस समय से अनेक उतार–चढाव भरे जीवन पथ पर सन्तुलित मन और धैर्य से भारतीय संस्कृति के प्रचार के साथ मानव मूल्यों के विकास के लिए बढते रहे हैं । मनुष्य में मनुष्य के प्रति मूल्यों के आधार पर सहज लगाव विकसित करने के लिए ट्रिनीडाड में भारतीय विद्या संस्थान की स्थापना की गई । इसके पश्चात् कनाड़ा और अमेरिका में भी संस्थान की स्थापना करके महाकवि ने आदर्श प्रस्तुत किया है । इसृषितुल्य जीवन जोने वाले प्रो० आदेश को वहां के प्रवासी भारतीय ही नहीं विदेशी भी 'गुरूदेव' सम्बोधित करते हुए भक्तिभाव पदर्शित करते हैं । प्रो० आदेश का सारा लक्ष्य ईश–आराधना, साहित्य और संगीत–साधना, भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रचार–प्रसार में बीतता है। इनके और इनकी पत्नी के अनुरूप व्यक्तित्व के कारण भारतीय विद्या संस्थान ऋषिभूमि बन गया है । इस संस्थान का शान्तिदायक परिवेश जिसने एक बार देखा है, वह कृष्ण की कालिन्दी फूल की तरह याद कर खुश

[13] प्रो० हरिशंकर आदेश, निर्मल सप्तशती, पृ० 88

होता रहता है । इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रो० आदेश को लोग 'गुरुदेव' आर श्रीमती निर्मला आदेश को 'गुरुमाता' को सम्बोधित कर सहज भाव से शान्ति और सन्तोष से लाभन्वित होते हैं । "कुछ व्यक्ति बाहरी रूप से कम सुन्दर व कम आकर्षक होने पर भी उनके विचार या मनोवृत्तियाँ उच्च कोटि की होती है । ऐसे व्यक्तियों का व्यक्तित्व उच्च ही कह जाएगा, क्योंकि मनोविज्ञान की दृष्टि से व्यक्ति की आन्तरिक योग्यताओं की अवहेलना नहीं की जा सकती ।"[14]

संदर्भिका

डॉ० किरण कुमारी गुप्ता – हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण – हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सं० 2014

गजानन मुक्तिबोध (डॉ० राजपाल शर्मा) – चांद का मुंह टेढ़ा है – एक विवेचन – अमीता प्रकाशन, चरर्वे बालान दिल्ली, 1984

गुलाब राय – काव्य और कला तथा अन्य निबंध

जयशंकर प्रसाद – कामायनी – भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सं० 2010

गोस्वामी तुलसीदास – रामचरित मानस (बड़ा) – गीता प्रेस, गोरखपुर, सं० 2035

डॉ० देवराज – भारतीय संस्कृति (महाकाव्यों के आलोक में) – प्रकाशक, शशिकांत, सं० 1966

श्रीमती देव कथूरिया – हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेम और सौंदर्य तत्व निरूपण – आशा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, 1974

डॉ० नगेन्द्र – भारतीय काव्य शास्त्र की परम्परा – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1979

डॉ० नरेश मिश्र – शतदल – आदेश – भूमिका

सं० डॉ० नरेश मिश्र – काव्य माधुरी – निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1998

[14] प्रो० हरिशंकर के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य, पुष्पा देवी, पृ० 27

पुष्पा देवी	– प्रो० हरिशंकर काव्य में प्रेम और सौंदर्य
पुष्पा देवी	– प्रो० हरिशंकर आदेश व्यक्तित्व और कृतित्व
फतह सिंह	– भारतीय सौंदर्य शास्त्रा की भूमिका – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1967
डॉ० बच्चन सिंह	– रीतिकालीन कवियों में प्रेम व्यंजना – नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं० 2015
महादेवी वर्मा	– आधुनिक कवि
सं० डॉ० मिथिलेश पांडेय	– भारतेन्दु ग्रन्थावली (खंड एक) – नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
मीरा श्रीवास्तव	– कृष्ण काव्य में सौंदर्य बोध एवं रसानुभूति – हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1976
रामचन्द्र शुक्ल	– चिंतामणि (पहला भाग) – इंडियन प्रैस प्रा०लि० प्रयाग, 1971